International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(1): 56-58

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(1): 56-58
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-11-2016
Accepted: 13-12-2016

Ratan Chandra Sarkar
Assistant Teacher, Chakchaka High School (Hs), Po. Chakchaka, Di. Coochbehar, West Bengal, India

Correspondence
Ratan Chandra Sarkar
Assistant Teacher, Chakchaka High School (Hs), Po. Chakchaka, Di. Coochbehar, West Bengal, India

यज्ञ का महत्त्व

Ratan Chandra Sarkar

प्रस्तावना

वैदिक कर्मकाण्ड मे यज्ञ प्रक्रिया एक अत्यावश्यक कर्म है। यज्ञ मे व्यवहार कीये जाने वाले पदार्थ- कस्तुरी, केसर, चन्दन, कर्पुर शरीर के लिये अत्यन्त पुष्ठिवर्धक। इस सव की व्यवहार यज्ञ को निर्मल तथा पवित्र करती है उसके साथ वायु और वारिस की पानि को भी परिशुद्ध कर देता है। इस वस्तुयों मे आग लगने से सुगन्ध उतपन्न होती है जिसके कारण प्रदुषण युक्त ग्यास भी दुरन्त नष्ट हो जाये। भगवान के पास पौछनेका एक विकल्प माध्यम जिसके कारण व्यक्ति अपनौं और समाज की उपकार साधन करते है। वातावरण को दुषण करने के पिछे मनुष्य स्वयं दायी है। मनुष्य निजस्व सुविधा तथा सुख के लिये वायुमण्डल को वारवार प्रदुषण करने लगता है। इसलिये वातावरण को प्रदुषण मुक्त करने का एकमात्र उपाय है यज्ञ करना।

यज्ञ काल मे उच्चरित वेदमन्त्र की पुनीत शब्द ध्वनि आकाश मे व्याप्त होकर लोगो के अन्तःकरण को सात्त्विक एवं शुद्ध वनाति है। इस प्रकार थोड़े ही स्वर्च एवं प्रयतन से यज्ञकर्तायो द्वारा संस्कार की वड़ी सेवा वन पड़ती है। वैयक्तिक उन्नति और सामाजिक प्रगति का सारा आधार सहकारिता, त्याग, परोपकार आदि प्रवृत्तिपर निर्भर है। यदि माता आपणि रक्तमांस मे से एक भाग नये शिशु का निर्माण के लिये न त्यगे, प्रसव की वेदना ना सहै, आपना शरीर निचोर कर दुध ना पिलाए पालन-पोषण मे कष्ट ना उठाये और यह सवकुछ नितान्त निःस्वार्थभाव से न करे, तो फिर मनुष्य का जीवन धारण करना भी संभव न हो। इसलिय काहा जाता है कि मनुष्य का जन्म यज्ञभावना के द्वारा या उसके कारण से संभव होता है दुध को मथने से उसका जल और घी अलग अलग हो जाता है। अव उसी अग्नि मे घी डाला जाता है, जिस से अग्नि उसे प्रकाश मे परिवर्तित कर देता है। अग्नि और घी का यह प्रतीकात्यक प्रयोग सिर्फ ए ज्ञान देना है कि जव ज्ञान को उसी अग्निरूपी सत्य मे दिया जाता है तव इस कर्म - का प्रभाव अलग हो जाता है और अग्नि उस ज्ञान को संसार मे प्रकासित हो अन्धकार को दूर करती है।

प्रसन्नता के साथ संसारिक विचारो के मथ कर उसे शुद्ध करने की क्रिया इन्द्रियों के संयम की खाम्वे की तरह खड़ा कर, सत्य और वाणी के रस्सी द्वारा की जाती है। दुध अर्थात् संसार के विचार के इसी तरह मथने से घी निकाला जाता है। जिसमे मल अर्थात् अशुद्धि नहीं होती अव उसमे उत्सर्ग या वैराग्य होता है और वह सुन्दर और पवित्र है। जो भी उस निर्मल या मल रहित ज्ञान से स्नान करता है, उसके हृदय श्रीराम की भक्ति, अपने आप परछायी की तरह आ जाती है। यदि यज्ञभावना के साथ मनुष्य ने अपने को जोड़ा न होता तो आपनी शारीरिक असमर्थता और दुर्वलता के कारण अन्य पशुयों की प्रतियोगिता मे यह कव का अपना अस्तित्व खो वैठा होता। यह जितना भी अव तक वढ़ा है उसमे उसकी यज्ञ भावना ही एकमात्र माध्यम है। आगे भी यदि प्रगति करती है, तो उसका आधार यही भावना होगी। ऋषियों ने कहा है - यज्ञ ही इस संसार चक्र का धुरा है। धुरा टुट जाने से गाड़ी का आगे बढ़ सकना कठिन है।

यज्ञ सामुहिकता का प्रतीक है। अन्य उपासनाए या धर्म प्रक्रीयां ऐसी है, जिन्मे कोइ अकेला कर या करा सकता है, पर यज्ञ ऐसा कार्य है। जिसमे अधिक लोगों के सहयोग की आवश्यकता है। आदिपर्वो पर किये जाने वाले यज्ञ तो सदा सामुहिक ही होता है।

प्रत्येक शुभ कार्य, प्रत्येक पर्व त्यौहार, संकर यज्ञ के साथ सम्पन्न होता है। यज्ञ भारतीय संस्कृति का पिता है। जगत् के दुर्वुद्धि ग्रस्त जनमानस का संशोधन करने के लिये सद्वुद्धि की देवी गायत्री महामन्त्र की शक्ति एवं सामथ्य अद्भूत भी है और अद्वितीय भी। प्रत्यक भारतीय धर्मानूयायी को यज्ञ प्रक्रीया से परिचित होना ही चाहिए।

भारतीय जन जीवन मे यज्ञों का क्या स्थान है, इसे जानने के लिये दुर जाने की आवश्यक्ता नहीं। भगवद्गीता चौथे अध्याय के अनुसार परमात्मा के निमित्त किया कोई भी कार्य यज्ञ कहा जाता है। याहा पर भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा अर्जुन की उपदेश देते हुए विस्तार पूर्वक विभिन्न प्रकार के यज्ञ को वताया गया है। वैदिक यज्ञ मे अश्वमेध यज्ञ का महत्वपूर्ण स्थान है। यह महाक्रतुओं मे से एक है। महाभारत मे महाराज युधिष्ठिर द्वारा कौरवों पर विजय प्राप्त करणे के पश्चात् पाप मोचनार्थ किये गये अश्वमेध यज्ञ करते है। लोककल्यान की दृष्ठि से सभी युगो मे यज्ञ की नितान्त आवश्यकता है। मनुष्य किसि भी धर्म की हो सभी यज्ञ लक्षन से संयुक्त (यज्ञमय) है। संसारके कीसि भी वस्तु की प्राप्ति यज्ञ के अलावा नहीं हो सकता है। यज्ञ से केवल ऐहलौकिक धन-धान्य, सन्तति आदि वस्तु की नहीं किन्तु पारलौकिक 'मोक्ष' आदि की भी प्राप्ति होती है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त यज्ञों की चर्चा की है। अग्निहोत्र एक नैत्यिक कत्यव्य है जो शास्त्र मर्यादा के अनुसार सभी को करना होता है। अन्य यज्ञ को करने के सभी अधिकारी हो, ऐसा नहीं है। लाभो का ज्ञान न होने पर भी वैदिक विधान होने से ही अग्निहोत्र सबको करणीय है। लाभ जानकर किया जाए तो उसमे अधिक श्रद्धा होती है। उन लाभों को प्राप्त करने की प्रेरणा भी मिलती है और उसके लिए मनुष्य प्रयन्त भी करता है। अतः वेदादि शास्त्रों ने भी तथा स्वामी दयानन्द जी ने भी यज्ञ एवं अग्निहोत्र के अनेकानेक लाभ वताए हैं। इन लाभो को अनागत रोगों से वचाव, प्राप्त रोगों का दूर होना, वायु-जल की शुद्धि औषधि-पत्र-पुष्प-फल-कन्दमूल आदि की पुष्टि स्वास्थ्य, दीर्घायुष्य, पापमोचन, शत्रु पराजय, सत्कर्मी मे प्रेरणा, पुत्र-प्राप्ति, वृष्टि, वृद्धि, भद्भाव सच्चरित्र सर्वविध सुख-आदि दर्शाए गए है। 'यज्ञार्थात् कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मवन्धनः'। दुसरितरफ यज्ञ अर्थात् भगवान श्रीविष्णु इसलिए भगवान श्रीविष्णु का कृपा पाने के हेतु यज्ञ करना उचित है। वेदों में कहा गया है- 'यज्ञो वै विष्णुः'। यदि यज्ञ ठिक तरिके से किया जाये तो फलदायक होते है। इये सत्य है की यज्ञानुष्ठानसे धनैश्वर्य मिलते है मगर ए मुख्य कारण नहीं है। यज्ञका प्रधान उद्देश है मोक्षप्राप्ति। यज्ञानुष्ठानसे सभी कार्यकलाप शुद्ध हो जाता है। इसलिय वेदों मे कहा गया है -

> "आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धि ध्रुवास्मृतिः स्मृतिलम्भे सर्व ग्रन्थीनां विप्रमोक्षः"।

श्रीमदभगवद्गीता मे श्रीभगवान वोले-

> "यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्विषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्याकारणात्।।"
>
> "अन्नात् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
> यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः।।"

वैदिक शास्त्र मे जिस तरा से यज्ञ के विधि वताय गया है कलियुग मे इये सम्भव
नहीं इसलिये संकीर्तन यज्ञ से मनुष्य उद्देश्य प्राप्त करते है।

> "कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं साङ्गोपाङ्गास्त्रपार्षदम्।
> यज्ञै संकीर्तनप्रायैयजन्ति हि सुमेधसः।।"

सन्दर्भ सूची

1. ऋग्वेदसंहिता
2. शतपथ ब्राह्मण (१३.१-५)
3. तैत्तिरीय ब्राह्मण (३.८-१)
4. आश्वलायन (१०.६)
5. महाभारत (१०.७१.१४)
6. आपस्तम्ब (२०)
7. कात्यायनीय श्रौतसूत्र (२०)
8. ऐतरेय ब्राह्मण (४.२०), (१/२/३)
9. प.त्रिवेणीरामशर्मा गौड़ -यज्ञमीमांसा
10. कठोपनिषद् (१/२/१६)
11. यज्ञ का महत्व-मनमोहन कुमार आर्य
12. श्रीमद्भगवद्गीता (कर्मयोग)